

भारतीय बाजारों पर अमेरिकी फेडरल रज़िर्व की नीतिका प्रभाव

हाल ही में **अमेरिकी फेडरल रज़िर्व** नीतिका बैठक ने नीतिका दर को 5.25% पर अपरवर्तित रखते हुए भारत की **ब्याज दरों** और बाजारों पर अटकलों को तेज़ कर दिया है, साथ ही वर्ष 2023 के अंत तक दो दरों में बढ़ोतरी के 6% तक पहुँचने का संकेत दिया है।

- इसने **मुद्रास्फीति** से निपटने के लिये इस साल दो और दरों में बढ़ोतरी की संभावना का संकेत दिया, जबकि फेडरल ने यथास्थिति बनाए रखने का नरिणय लिया।

भारतीय बाजार पर फेडरल नीतिका प्रभाव:

- फेडरल नीतिका घोषणा के बाद **29 जून, 2023 को भारतीय बाजारों में 0.49% की गरिषट आई।**
- फेडरल नीतिका विभिन्न चैनलों/कारकों के माध्यम से भारतीय बाजारों को प्रभावित करती है जैसे:
 - वनिमिय दर चैनल:** फेडरल की दर में वृद्धि **भारतीय रुपए** सहित अन्य मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर को मज़बूत करती है।
 - कमज़ोर रुपया उन भारतीय उधारकर्त्ताओं के लिये ऋण सेवा लागत भी बढ़ाता है** जिन्होंने वदिशी मुद्रा में ऋण लिया है।
 - पूंजी प्रवाह चैनल:** फेडरल की दर में बढ़ोतरी अमेरिका और भारत के बीच **ब्याज दर के अंतर को भी कम** करती है जो उच्च रटिर्वन की इच्छा रखने वाले वदिशी निविशकों के लिये भारत को कम आकर्षक बनाता है।
 - इससे **भारत के इक्विटी और ऋण बाजारों से पूंजी का बहरिवाह** हो सकता है, जिससे परसिंपत्तिका की कीमतें कम हो सकती हैं और अस्थिरता बढ़ सकती है।
 - पूंजी का बहरिवाह भी भारत के वदिशी मुद्रा भंडार को कम कर सकता है और घरेलू बाजारों में तरलता की कमी की स्थिति उत्पन्न कर सकता है।**
 - मुद्रास्फीति चैनल:** फेडरल रज़िर्व की दर में बढ़ोतरी भी दो तरह से भारत की मुद्रास्फीतिको प्रभावित कर सकती है।
 - सबसे पहले **कमज़ोर रुपया भारत हेतु आयातित मुद्रास्फीतिको बढ़ा सकता है**, क्योंकि इससे तेल, सोना और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे आयातित वस्तुओं की लागत बढ़ जाती है।
 - दूसरा **मज़बूत अमेरिकी मांग के कारण उच्च वैश्विक कमोडिटी की कीमतें भी भारत की घरेलू मुद्रास्फीतिको बढ़ा सकती हैं**, क्योंकि यह कृषि, वनिरिमाण और सेवाओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों हेतु इनपुट लागत को प्रभावित करती है।
 - आर्थिक वृद्धि चैनल:** फेडरल रज़िर्व की दरों में बढ़ोतरी का भारत की आर्थिक वृद्धि पर दो तरह से प्रभाव पड़ सकता है।
 - सबसे पहले अमेरिकी सख्त मोर्दरकि नीतिका महामारी से वैश्विक आर्थिक सुधार को धीमा कर सकती है**, जो भारत की नरियात संभावनाओं एवं बाहरी मांग को नुकसान पहुँचा सकती है।
 - दूसरा **पूंजी के बहरिवाह और मुद्रास्फीतिके दबाव के कारण उच्च घरेलू ब्याज दरें भारत की घरेलू मांग तथा निविश गतिविधिको धीमा कर सकती हैं।**

भारतीय बाजारों के लिये कुछ संभावित परिदृश्य:

- सर्वोत्तम स्थिति परिदृश्य:** फेड की दर, स्पष्ट और विश्वसनीय संचार के साथ क्रमिक एवं मध्यम वृद्धि है।
 - भारतीय रज़िर्व बैंक एक उदार रुख के साथ भारत में तरलता और ऋण की स्थिति** का समर्थन करता है।
 - भारत का आर्थिक सुधार मज़बूत और लचीला** है जिसके अंतर्गत एक मज़बूत घरेलू एवं बाहरी मांग का समर्थन प्राप्त होता है। भारत की मुद्रास्फीति नियंत्रित एवं प्रबंधनीय है और साथ ही इसके राजकोषीय और चालू खाता घाटा नियंत्रण में हैं।
 - वैश्विक जोखिम क्षमता अधिक** है, साथ ही वदिशी निविशकों की स्थिति भारत की विकास क्षमता और सुधारों पर सकारात्मक बनी हुई है।

नोट: उदार रुख का अर्थ है कि केंद्रीय बैंक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिये मुद्रा आपूर्तिको वसितारित करने के साथ उदार नीतिका अवधि में केंद्रीय बैंक ब्याज दरों में कटौती करने को भी तैयार है।

- सबसे खराब स्थिति परिदृश्य:** फेड की दर वृद्धि अचानक और आक्रामक होती है, साथ ही अप्रत्याशित मुद्रास्फीतिके झटकों से प्रेरित होती है।
 - RBI को रुपए की सुरक्षा और मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने के लिये** अपनी नीतिका सख्त करने हेतु मजबूर होना पड़ा है। भारत के आर्थिक सुधार कमज़ोर और असमान हैं जो महामारी से संबंधित अनिश्चितताओं एवं संरचनात्मक बाधाओं के कारण बाधित हुए हैं।

- भारत की मुद्रास्फीति लगातार उच्च बनी हुई है, साथ ही इसका राजकोषीय और चालू खाता घाटा भी अस्थिर रहा है।
- भू-राजनीतिक तनाव, नीतगत अनश्चितता और शासन संबंधी मुद्दों के कारण वैश्विक जोखिम कम है और वदेशी नविशक भारत के बाजारों से पलायन कर रहे हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. भारतीय सरकारी बॉण्ड प्रतफल नमिनलखिति में से कसिसे/कनिसे प्रभावति होता/होते है/हैं? (2021)

1. यूनाइटेड स्टेट फेडरल रज़िर्व की कार्यवाही
2. भारतीय रज़िर्व बैंक की कार्यवाही
3. मुद्रास्फीति और अलपावध बियाज दर

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि: (2022)

1. अमेरिकी फेडरल रज़िर्व की सख्त मुद्रा नीत पूंजी पलायन की ओर ले जा सकती है।
2. पूंजी पलायन वर्तमान वदेशी वाणज्यिक ऋणग्रहण (External Commercial Borrowings- ECBs) वाली फर्मों की ब्याज लागत को बढ़ा सकती है।
3. घरेलू मुद्रा का अवमूल्यन ECBs से संबद्ध मुद्रा जोखिम को घटाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

- (a) 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)